Volume-08
Issue-12
December-2021

ISSN: 2349-7637 (Online)
RESEARCH HUB International Multidisciplinary Research Journal
https://rhimrj.co.in/ [Peer-Reviewed Journal]
https://doi.org/10.53573/rhimrj.2021.v08i12.013

मोबाइल फोन और ग्रामीण

Dr. Ashok Kumar Meena

Assistant Professor, Media and mass communication department, NIMS university Jaipur (Rajasthan)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 December 2021

Keywords
तकनीकी, मोबाइल, फोन, ग्रामीण।

Corresponding Email:
kumarashokam@gmail.com

ABSTRACT

आजकल भारतीय बाजारों में तकनीकी वस्तुओं का बोलबाला है। तकनीकी इतनी सस्ती होती जा रही है, कि हर कोई इससे अछूता नहीं रह सकता। शहर के कारोबारी से लेकर गांव के किसान तक तकनीकी वस्तुओं का उपयोग कर रहे हैं। आज किसान भी गांव में रंगीन टीवी, डी.टी.एच., एफ.एम. रेडियो, पंखा तक उपयोग कर पा रहा है। इतना ही नहीं आज किसान अपनी फसल भी तकनीकी सहायता से ही कर रहा है। फसल के लिए बीज बोने से लेकर फसल काटने तक की प्रक्रिया में तकनीकी सहायता ली जा रही है। यह भी सच है कि इसमें धन अधिक खर्च हो जाता है। हालांकि परम्परावादी अर्थात पहले से चली आ रही प्रक्रिया इतनी खर्चीली नहीं है। इन सबके बीच तकनीकी का सबसे खास उदाहरण है मोबाइल फोन।

शोध विस्तार–

किसान, मजदूर, सब्जी विक्रेता, दुकानदार, दूध विक्रेता आदि गांव से शहर सामान लेने आते हैं अथवा अपना सामान बेचने जाते हैं. इसमें मोबाइल फोन अहम भूमिका निभाने लगा है। किसान का ही उदाहरण ले लिया जाए तो पता चलेगा कि पुराने समय में किसान शहर में अपनी फसल बेचने बैलगाड़ी या ट्रेक्टर से जाता था। यदि भाव कम भी है तो मजबूरन बेचना पड़ता था, क्योंकि वापस ले जाने में भी खर्चा होता था। लेकिन मोबाइल फोन आने के बाद ऐसा नहीं है। अब किसान पहले ही मोबाइल फोन से कॉल करके फसल का भाव अथवा बिक्री कीमत पता कर लेते हैं, यदि लाभ होता है तो उसके बाद ही शहर जाते हैं अथवा भाव गिर जाने पर वे जाना निरस्त कर देते हैं। इसके अलावा खेती का सामान खरीदने अथवा बेचने से पहले फोन करके स्थिति का पता कर लेते हैं। दुकान खुलेगी या नहीं अथवा कब तक खुलेगी। कहीं शहर में बाजार बंद तो नहीं। मौसम का हाल आदि पहले ही फोन पर मैसेज या कॉल करके पता कर लेते हैं। आसानी से कहा जा सकता है कि मोबाइल फोन ने ग्रामीणों का जीवन आसान किया है।

यह बताया जाता है कि मोबाइल फोन और इंटरनेट शहर के लोगों में अपनी पकड़ बना रहा है, लेकिन यह जानकारी नहीं दी जाती कि मोबाइल फोन जितना लाभकारी शहरी क्षेत्रों के लिए हो रहा है, उतना ही ग्रामीण परिवेश के लिए भी है। साप्ताहिक पत्रिका कुरूक्षेत्र के दिसम्बर 2015 के अंक में हेमंत जोशी ने अपने लेख में बताया कि सामाजिक बदलाव में मोबाइल का योगदान है। गांवों में मोबाइल के साथ इंटरनेट की मांग में भी काफी वृद्धि हुई है। सोशल मीडिया से भी ग्रामीण परिवार जुड़ रहे हैं। ऐसे में हम कह सकते हैं कि ग्रामीण विकास में वर्तमान में मोबाइल फोन के योगदान को नकारा नहीं जा सकता है। करूक्षेत्र के अप्रैल 2013 के अंक में कुछ लेख ऐसे भी प्रकाशित किए गए जिसमें बताया गया कि बजट में ग्रामीण विकास को खासी जगह दी गई।

मोबाइल फोन पर जब भी लेख लिखे जाते हैं, उनमें शहरों का नाम ज्यादा आता है और लगभग गांवों को छोड़ दिया जाता है। ऐसा नहीं कि गांवों में मोबाइल फोन उपयोग नहीं किए जाते। बस शहर के मुकाबले यहां उपभोक्ता कम होते हैं। लेकिन फिर भी यहां फीचर फोन के साथ साथ स्मार्ट फोन भी चलाये जाते हैं। इंटरनेट का उपयोग किया जाता है, यू–ट्यूब जैसे वीडियो साइट का उपयोग किया जाता है। कृषि, स्वास्थ्य आदि से जुड़ी जानकारियां अथवा सूचनाओं को एकत्रित किया जाता है।

इन सब के अलावा मोबाइल का गांव तक पहुंचने का सफर भी आसान रहा। अपने ग्राहकों की संख्या बढ़ाने के लिए निजी संचार कंपनियों को मजबूर होकर शहर से गांव की ओर मुड़ना पड़ा। ऐसे में सरकार को तकनीकी संचार के विकास में अधिक मेहनत नहीं करनी पड़ी। क्योंकि निजी कंपनियों की प्रतियोगिता ने मोबाइल ओर सिम कार्ड को गांव गांव तक पहुंचा दिया। निजी कंपनियों ने अपनी ओर आंकर्षित करने के लिए फ्री सिम

तक देने शुरू कर दिए। ऐसे में ग्रामीण रहवासियों ने मोबाइल से स्वतः ही जुड़ना शुरू कर दिया और आज मोबाइल फोन ग्रामीण रहवासियों के जीवन का अहम हिस्सा बनता जा रहा है। शहर जाने से पहले वे फोन करके पता कर लेते हैं, कि शहर आकर उनका काम हो जाएगा या नहीं। इसी प्रकार किसान भी पहले फ़ोन से बात करके पता कर लेता है कि बाज़ार में आज भाव क्या है, तभी शहर अपनी फसल बेचने जाता है।

निष्कर्षः–

अंत में कहा जा सकता है कि मोबाइल फ़ोन सिर्फ शहर के लिए लाभदायक सिद्ध नहीं हो रहा बल्कि इसने गाँव में भी अपनी जड़े बनाना शुरू कर दिया है, ग्रामीण विकास में मोबाइल का महत्वपूर्ण योगदान है जो हमें समय समय पर देखने को मिलता रहेगा.

संदर्भ सूची

1. कम्प्यूटर संचार सूचना, इंडिया पब्लिकेशन, नई दिल्ली, अगस्त 2008
2. गोयल हेमन्त कुमार, कम्प्यूटर शिक्षा, आर. लाल बुक डिपो मेरठ, 2008
3. सर विलियम , स्टुअर्ट (2008); मोबाइल फोन का स्वास्थ्य पर प्रभाव, संचार तकनीकी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी,
4. मित्तल और कुमार (2000); मोबाइल फोन का कृषि पर प्रभाव एक, आर्थिक विश्लेषण साप्ताहिक शोध पत्र, कृषि आर्थिक रिसर्च, चंडीगढ़,
5. मुद्गल, राहुल. (2011). संचार माध्यम और पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास.
6. सिंह, ओम प्रकाश. संचार और पत्रकारिता के विविध आयाम. नई दिल्ली : क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी
7. अब्दुल्ला (2003); मोबाइल फोन के उपयोग का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव, इलेक्ट्रॉनिक अनुसंधान– के ए सी एस टी, पी ओ बॉक्सः साउदी अरब
8. https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-editorials/digital-talent
9. नया मीडिया अध्ययन और अभ्यास, शालिनी जोशी और शिवप्रसाद जोशी, पेंगुइन पब्लिकेशन, 2015
10. स्मिथ, रिचर्ड (2013–10–15)। "डिजिटल मीडिया क्या है?" . डिजिटल मीडिया के लिए केंद्र। 2020–04–22
11. रेबर्न, डैन (2012–07–26)। स्ट्रीमिंग और डिजिटल मीडियाः व्यापार और प्रौद्योगिकी को समझना । टेलर और फ्रांसिस। आईएसबीएन 978–1–136–03217–2.